Gupta period (part -7)

→ समुद्रगुप्त

इसने निम्न प्रकार के सिक्के जारी किये;

A. उत्पाक भाँति – इसमें शासक को हाथ में ध्वज द
लिये हुए दिखलाया गया है.

B. धनुर्धर भाँति –

C. कृतान्त परशु प्रकार के – इसमें हाथ में कुल्हाड़ी लिये ह
एक कुबड़ा दिखलाया गया है.

D. वीणा वादक भाँति – इसमें समुद्रगुप्त को वीणा बजाते
दिखलाया गया है.

E. व्याघ्र हंता भाँति

F. अश्वमेध पराक्रमांक भाँति

→ चंद्रगुप्त-II विक्रमादित्य

इसने सात प्रकार के सिक्के जारी किये;

उत्पाक भाँति

धनुर्धर भाँति

सिंह हंता भाँति – इस प्रकार के सिक्कों से यह पता च
है कि C.II विक्रमादित्य ने शकों को परा
किया था।

अश्वारोही प्रकार

छत्रपति प्रकार

पर्यंक भाँति – पर्यंक एक प्रकार का आसन है.

चक्र विक्रम प्रकार –

– हाल में ही C.II विक्रमादित्य का एक अन्य प्रकार का मिला है। जिसे 'राजदंपत्ति प्रकार' के नाम से जाना गया।

3 कुमार गुप्त -I

गुप्तकालीन शासकों में सर्वाधिक भाँति के सिक्के कुमारगुप्त -I ने ही चलाये थे. इसने 14 प्रकार के सिक्के चलाये :

खड्ग हस्त प्रकार का
गजारोही भाँति
कार्तिकेय भाँति
अप्रतिघ भाँति के - यह रहस्यमयी प्रकार के सिक्के है. जिसमें तीन व्यक्तियों के चित्र है. जिसके बीच में पुरुष है, बाँयी ओर एक युवक तथा दायी ओर एक नारी की आकृति है.

3 स्कंदगुप्त

इसने तीन प्रकार के सिक्के जारी किये.

धनुर्धर भाँति
राजदंपत्ति भाँति
अश्वारोही भाँति

गुप्तो के प्रारंभिक सोने के सिक्के 121 ग्रेन अर्थात् 7.48 gram का था. इसमें करीब 90% शुद्ध सोना होता था. धिरे-धिरे सिक्के भारी होते चले गये और अस सोने का अनुपात घटता चला गया. स्कंदगुप्त के period सिक्के का वजन 144 ग्रेन अर्थात् 9.33 gram के लगभग हो गया और सोने का अनुपात घटकर 80% रह गया. अर्थात निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि सोने के सिक्को का वजन पहले की तुलना में बाद में बढ़ा है परन्तु सोने की शुद्धता बाद में घटी है.

कुषाणो ने यद्यपि सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के चलाये पर सबसे अधिक सोने के सिक्के चलाने का श्रेय गुप्त शासको ही प्राप्त है.